

7

■ गलत, यानी कितना गलत?

■ विज्ञान में अवधारणाएँ कुछ लोगों के निजी अनुभवों, अहसासों से शुरू होती हैं, फिर सार्वजनिक होकर तर्क की कसौटी पर परखी जाने पर सही या गलत का तमगा पाती हैं। एक जाना-पहचाना उदाहरण है - पृथ्वी समतल-चपटी है, यह अवधारणा। बरसों तक बहुत-से लोगों का मानना था कि पृथ्वी चपटी और सपाट है। जैसे-जैसे हमारे मापन यंत्रों में सुधार होता गया, धरती के आकार के सम्बन्ध में हमारी समझ भी पुख्ता होती गई। विख्यात विज्ञान लेखक एसीमोव मानते हैं कि कोई गलत विचार उतना भी गलत नहीं होता जितना हम आम तौर पर समझते हैं। सबसे ज़रूरी बात है किसी विचार का प्रस्तुत होना। शायद विज्ञान इसी तरह आगे बढ़ता है।

सामाजिक विज्ञान के शैक्षणिक मुद्दों पर पुनर्विचार

पिछले कुछ वर्षों में स्कूली शिक्षा में सतत एवं समावेशी मूल्यांकन (कंटिन्यूअस एंड कॉम्प्रिहेन्सिव इवेल्यूएशन) एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में उभरकर सामने आया है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने अगस्त 2010 में *शिक्षक मार्गदर्शिका* प्रकाशित की थी, इसे विद्यार्थियों के रचनात्मक मूल्यांकन में मदद पहुँचाने के लिए तैयार किया गया है। मार्गदर्शिका राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा 2005 के अन्तर्गत कक्षा-9 के लिए तैयार की गई पाठ्य पुस्तकों और पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखकर बनाई गई है और इसमें इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और आपदा प्रबन्धन को शामिल किया गया है।

मार्गदर्शिका को शिक्षा शास्त्र, विषयवस्तु, शामिल की गई सामग्री और छोड़ दी गई चीज़ों के सन्दर्भ में समझने की ज़रूरत है। इस लेख में कुमकुम रॉय मार्गदर्शिका के विविध पहलुओं की समीक्षा कर रही हैं।

51

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-27 (मूल अंक-84), जनवरी-फरवरी 2013

इस अंक में

- 4 | आपने लिखा
7 | गलत, यानी कितना गलत?
आइज़ेक एसीमोव
- 17 | एक नया जीव कोशिकांग होने की राह पर
किशोर पंवार
- 25 | बच्चों में नेतृत्व क्षमता और जवाबदेही
यशस्वी द्विवेदी
- 34 | 'वे' स्कूल क्यों आते हैं?
मोहम्मद उमर
- 41 | ऑक्सीजन: जलने का विज्ञान
सुशील जोशी
- 46 | क्या बादल का वजन पता किया...
सवालीराम
- 51 | सामाजिक विज्ञान के शैक्षणिक मुद्दों...
कुमकुम राँय
- 67 | बच्चों की शुरुआती साक्षरता - कुछ अनुभव
कमलेश चन्द्र जोशी
- 77 | निबन्ध पर 'निबन्ध'
कालू राम शर्मा
- 87 | कक्कु के कारनामे - भाग 2
पी.के. बसन्त
- 93 | इंडेक्स अंक 79-84